श्री त्रिकाल चौबीसी मंडल विधान

सुदर्शन मेरु सम्बन्धी भरत क्षेत्र में भूत, भविष्य व वर्तमान काल की तीन (त्रिकाल) चौबीसी का यह विधान होता हैं। इसमें तीन पूजन व ७२ अर्घ हैं।

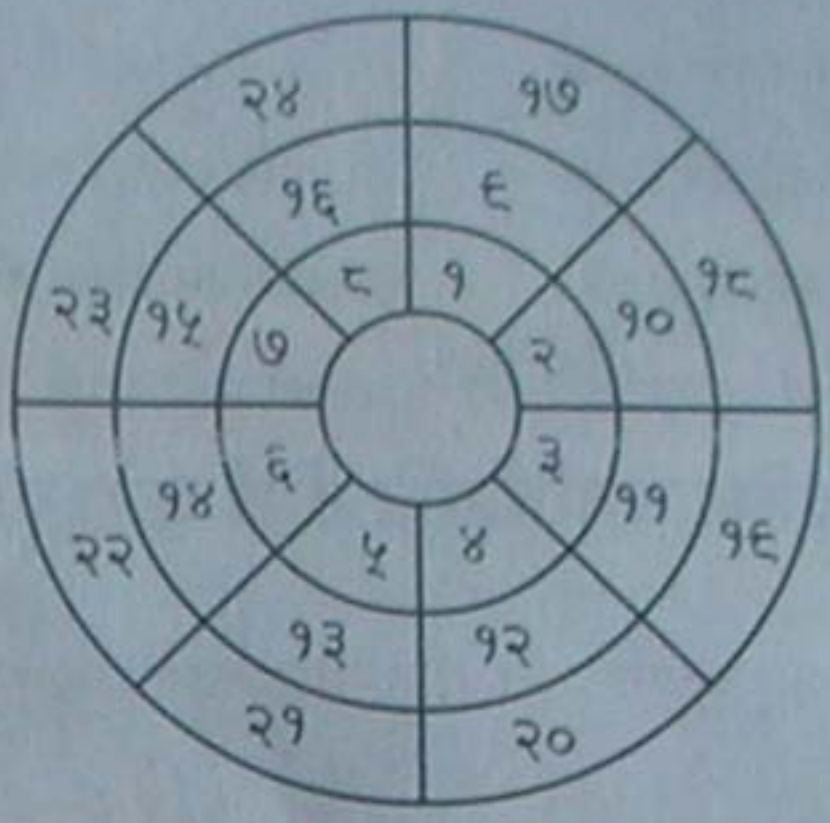

त्रिकाल चौबीसी जिनालय

त्रिकाल चौबीसी वह जिनालय होता है जिसमें भरत क्षेत्र के भूत, वर्तमान व भविष्य की चौबीस-चौबीस जिन प्रतिमायें जिनालयों में विराजमान हों।

भगवान ऋषभदेव के निर्वाण के बाद शोक मन होकर भरत चक्रवर्ति विचारने लगे कि अब तीर्थ का प्रवर्तन कैसे होगा। तब महा मुनि राज गणधर परमेष्ठि कहते हैं, कि :-"हे चक्री ! अब धर्म का प्रर्वतन जिन-बिम्ब की स्थापना से ही सम्भव है।" तब चक्रवर्ती भरत ने मुनि ऋषभसेन महाराज का आशीर्वाद प्राप्त कर कैलाश पर्वत पर स्वर्णमयी ७२ जिनालयों का निर्माण कराकर रत्नरचित ५००-५०० धनुष-प्रमाण ७२ जिन-बिम्बों की स्थापना की।

तीस चौबीसी का अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर में नवीना है।
पूजतें पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषै छाजै।
सात शत बीस जिन राजै, पूजतां पाप सब भाजै॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत दश क्षेत्र के विषै तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिन बिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

भूतकाल के तीर्थंकरों के नाम

१. श्री निर्वाण जी	७. श्री अमलप्रभु जी	१३. श्री शिवगण जी	१९. श्री कृष्णमति जी
२. श्री सागर जी	८. श्री उद्धर जी	१४. श्री उत्साह जी	२०. श्री ज्ञानमति जी
३. श्री महासाधु जी	९. श्री अडिगर जी	१५. श्री ज्ञानेश्वर जी	२१. श्री शुद्धमति जी
४. श्री विमलप्रभु जी	१०. श्री सन्मति जी	१६. श्री परमेश्वर जी	२२. श्री भद्र जी
५. श्रीधर जी	११. श्री सिन्धु जी	१७. श्री विमलेश्वर जी	२३. श्री अतिक्रांत जी
६. श्री सुदत्त जी	१२. श्री कुसुमांजलि जी	१८. श्री यशोधर जी	२४. श्री शांता जी

भूतकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थ करेभ्यो नमो नमः ॥

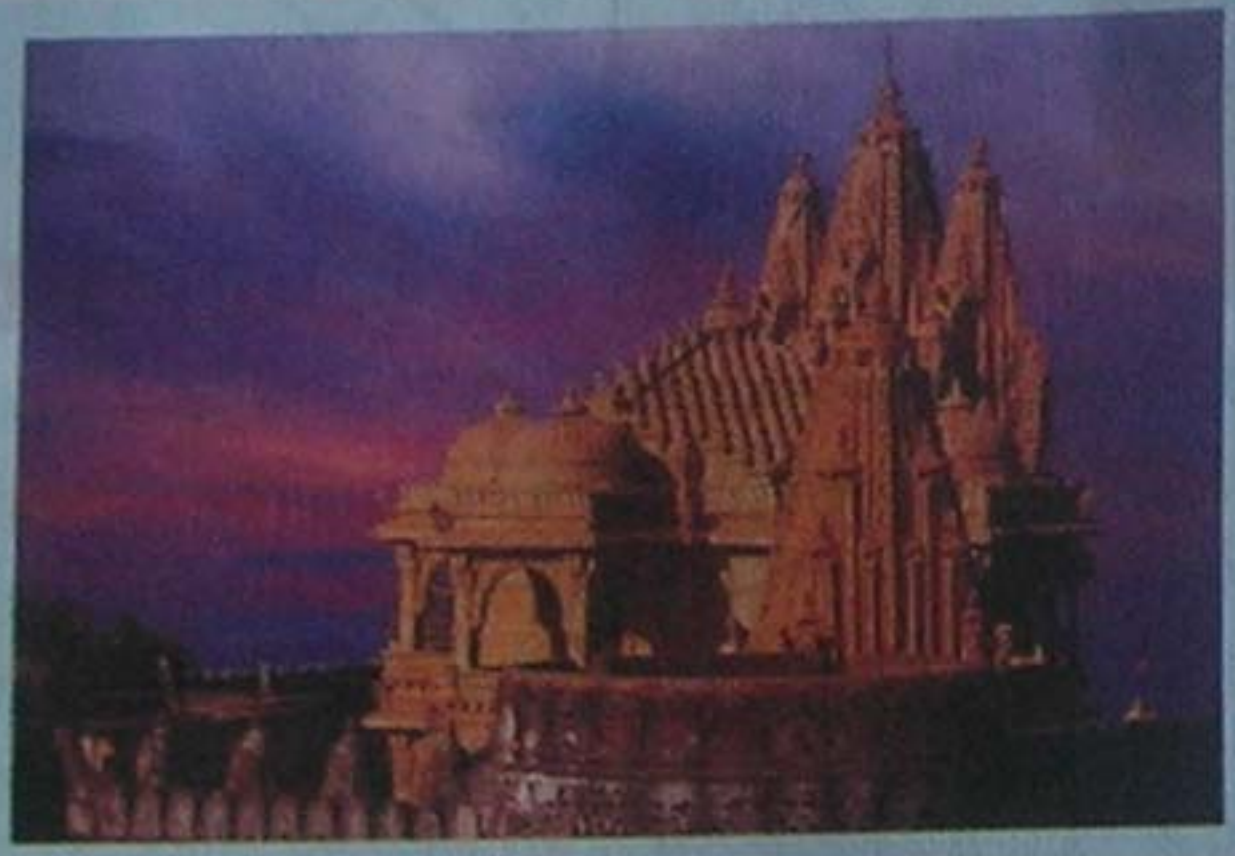

भविष्य काल के तीर्थंकरों के नाम

१. श्री महापद्म जी	७. श्री कुलपुत्र जी	१३. श्री निष्पाप जी	१९. श्री स्वयंप्रभु जी
२. श्री सुरदेव जी	८. श्री उदंक जी	१४. श्री निष्कषाय जी	२०. श्री अनिवृत्तिक जी
३. श्री सुपार्श्व जी	९. श्री प्रौष्ठिल जी	१५. श्री विपुल जी	२१. श्री जय जी
४. श्री स्वयंप्रभु जी	१०. श्री जय कीर्ति जी	१६. श्री निर्मल जी	२२. श्री विमल जी
५. श्री सर्वात्मभूत जी	११. श्री मुनिसुव्रत जी	१७. श्री चित्रगुप्त जी	२३. श्री देवपाल जी
६. श्री देवपुत्र जी	१२. श्री अरची (अमम)	१८. श्री समाधिगुप्त जी	२४. श्री अनन्तवीर्य जी

भविष्यकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थ करेभ्यो नमो नमः ॥

वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों के नाम एवं चिन्ह

24 तीर्थंकर

	१. श्री ऋषभनाथ	२. श्री अजितनाथ	३. श्री संभवनाथ	४. श्री अभिनंदननाथ
	बैल	हाथी	घोड़ा	बन्दर
५. श्री सुमतिनाथ	६. श्री पद्मप्रभ	७. श्री सुपार्श्वनाथ	८. श्री चन्द्रप्रभ	९. श्री पुष्पदंतनाथ
चकवा	कमल	साथिया	चंद्रमा	मगर
१०. श्री शीतलनाथ	११. श्री श्रेयांसनाथ	१२. श्री वासुपूज्य	१३. श्री विमलनाथ	१४. श्री अनंतनाथ
कल्पवृक्ष	गेंडा	भैंसा	शूकर	सेही
१५. श्री धर्मनाथ	१६. श्री शांतिनाथ	१७. श्री कुन्थुनाथ	१८. श्री अरनाथ	१९. श्री मल्लिनाथ
वज्रदंड	हिरण	बकरा	मछली	कलश
२०. श्री मुनिसुव्रत नाथ	२१. श्री नमिनाथ	२२. श्री नेमिनाथ	२३. श्री पार्श्वनाथ	२४. श्री महावीर
कछुवा	नील कमल	शंख	सर्प	सिंह